اَعُوْذُبِاللهِ مِنَ الشيطٰنِ الرَّجِيم ہ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ہ

سورۃ فاتحہ مع بسم اللہ.....

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ سَيِّدُنَا وَمَوْلٰينا وَنَبِيِّنَا اَحْمَد مُجْتَبٰى مُحَمَّد مُصْطَفٰى مَحْمُود مُرتضٰى الرَّسُوْلِ النَّبِىِّ الْاُمِّىِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ وَاَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيّٰتِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ وَسَلَامٌ عَلٰى جَمِيْعِ الْاَنْبِيَاءِ وَالْمُرْسَلِيْنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَاءِ والصّٰلِحِيْنَ

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ فِىْ هٰذِهِ الَّيْلَةِ الْمُبَارَكَةِ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ اَوْ كَمَا هُوَ فِىْ عِلْمِكَ نَسْئَلُكَ بِاٰيٰتِكَ كُلَّ خَيْرٍ اَعْطَيْتَ وَاَنْعَمْتَ عَلٰى مَنْ اَنْعَمْتَ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا بِمَا تَخْبِرُنَا وَبِمَا تَعِظُنَا وَبِمَا تَاْمُرُنَا وَبِمَا وَعَدْتَنَا لِلْمُؤْمِنِيْنَ فِى الْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَنَا عَلٰى رُسُلِكَ

ऐ अल्लाह हम आप से सवाल करते/करती हैं, इस मुबारक रात में जो हज़ार महीनों से बेहतर है या जैसी वह आपके इल्म में है। हम आप से सवाल करते/करती हैं, आपकी आयात के ज़रिये, हर भलाई का जो आपने अता (प्रदान) की और जो नेमत भी आपने उन्हें दी जिन पर आपने इनाम किया। ऐ हमारे रब हमसे क़बूल फ़रमाइये उसके ज़रिये जिसकी आप ने हमें ख़बर दी और जिसकी आप ने हमें नसीहत की और जिसका आप ने हमें हुक्म दिया और जिसका आप ने ईमान वालों के लिये क़ुरआन-ए-अज़ीम में वादा किया। ऐ हमारे रब जिस का आप ने अपने रसूलों रसूलों के ज़रिये हमसे वादा किया है वह सब हमें अता फ़रमाइये।

...إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ 6:162

बेशक मेरी नमाज़ और मेरी क़ुरबानी और मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह के लिए है, जो सब संसारों का रब है।

...حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ 9:129

मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है, उसके अतिरिक्त कोई इलाह नहीं! उसी पर मैं ने भरोसा किया और वही महिमाशाली नियंत्रण (के साथ सब अधीनों) का पालनहार है।

فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ 23:116

तो सर्वोच्च है अल्लाह, सच्चा सम्राट! उसके सिवा कोई इलाह नहीं, वही सम्मानजनक नियंत्रण (के साथ सब अधीनों) का पालनहार है।

رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِن ذُرِّيَّتِي ۚ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ 14:40

मेरे रब! मुझे और मेरी सन्तान को नमाज़ क़ायम करने वाला बना। हमारे रब! और हमारी प्रार्थना स्वीकार कर।

...رَّبِّ أَدْخِلْنِي مُدْخَلَ صِدْقٍ وَأَخْرِجْنِي مُخْرَجَ صِدْقٍ وَاجْعَل لِّي مِن لَّدُنكَ سُلْطَانًا نَّصِيرًا 17:80

मेरे रब! तू मुझे दाख़िल होने की जगह सत्य के साथ दाख़िल कर और निकलने की जगह से सत्य के साथ निकाल, और अपनी ओर से मुझे सहायक शक्ति प्रदान कर।

فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۗ .....رَّبِّ زِدْنِي عِلْمًا 20:114

अतः सर्वोच्च है अल्लाह, सच्चा सम्राट! मेरे रब, मुझे ज्ञान में अभिवृद्धि (इज़ाफ़ा) प्रदान कर।

.....رَبِّ انصُرْنِي عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِينَ 29:30

ऐ मेरे रब! बिगाड़ पैदा करने वाले लोगों के मुक़ावले मेरी सहायता कर।

.....عَسَىٰ رَبِّي أَن يَهْدِيَنِي سَوَاءَ السَّبِيلِ 28:22

आशा है, मेरा रब मेरी मुनासिब रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करेगा।

...رَبِّ إِنِّي لِمَا أَنزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ 28:24

ऐ मेरे रब, जो भलाई भी तू मेरी उतार दे, मैं उसका ज़रूरतमंद हूँ।

...رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ﴿٢٥﴾ وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ﴿٢٦﴾ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّن لِّسَانِي ﴿٢٧﴾ يَفْقَهُوا قَوْلِي...20:25-28

"मेरे रब! मेरा सीना मेरे लिए खोल दे और मेरे काम को मेरे लिए आसान कर दे और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे। कि वे मेरी बात समझ सकें।

.....رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ 2:201

हमारे रब! हमें प्रदान कर दुनिया में भी अच्छी दशा और आख़िरत में भी अच्छा दशा, और हमें आग (जहन्नम) की यातना से बचा ले।

رَّبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ أَن يَحْضُرُونِ 23:97-98

ऐ मेरे रब! मैं शैतान की उकसाहटों से तेरी शरण चाहता हूँ और मेरे रब! मैं इससे भी तेरी शरण चाहता हूँ कि वे मेरे पास आएँ।

.....رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ 23:118

मेरे रब! मेरी ग़लतियाँ ढाँप दे और दया कर। तू तो सब से अच्छा दया करनेवाला है।

رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا وَأَلْحِقْنِي بِالصَّالِحِينَ وَاجْعَل لِّي لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْآخِرِينَ وَاجْعَلْنِي مِن وَرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيمِ 26:83-85

ऐ मेरे रब! मुझे निर्णय-शक्ति प्रदान कर और मुझे योग्य लोगों के साथ मिला। और बाद के आनेवालों में से मुझे सच्ची ख़्याति प्रदान कर और मुझे नेमत भरी जन्नत के वारिसों में सम्मिलित कर।

...رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَدْخِلْنِي بِرَحْمَتِكَ فِي عِبَادِكَ الصَّالِحِينَ 27:19

मेरे रब! मुझे संभाले रख कि मैं तेरी उस कृपा पर कृतज्ञता दिखाता रहूँ जो तूने मुझपर और मेरे माँ-बाप पर की है। और यह कि अच्छा कर्म करूँ जो तुझे पसन्द आए और अपनी दयालुता से मुझे अपने नेक बन्दों में दाख़िल कर।

رَّبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَن دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ 71:28

ऐ मेरे रब! मेरी ग़लतियाँ ढाँप दे और मेरे माँ-बाप की भी और हर उस व्यक्ति की भी जो मेरे घर में ईमानवाला बन

कर दाख़िल हुआ और (अन्य सब) ईमानवाले पुरुषों और ईमानवाली स्त्रियों की भी।

....رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا (25:74)

ऐ हमारे रब! हमें हमारी अपनी पत्नियों और हमारी संतान से आँखों की ठंडक प्रदान कर और हमें नाफ़रमानी से बचने वालों का नायक बना दे।

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ إِلَيْهَا ۖ (7:189)

वही है जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा बनाया, ताकि उस से सुकून प्राप्त करे।

قَالَ رَبِّ أَنَّىٰ يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَكَانَتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا وَقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا

قَالَ كَذَٰلِكَ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَقَدْ خَلَقْتُكَ مِن قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْئًا (19:8-9)

उसने कहा, "मेरे रब! मेरे लड़का कहाँ से होगा, जबकि मेरी पत्नी बाँझ है और मैं बुढ़ापे की अन्तिम अवस्था को पहुँच चुका हूँ?" कहा, "ऐसा ही होगा। तेरे रब ने कहा कि यह मेरे लिए सरल है। इससे पहले मैं तुझे पैदा कर चुका हूँ, जबकि तू कुछ भी न था।

.....رَبِّ هَبْ لِي مِن لَّدُنكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۖ إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ (3:38)

मेरे रब! मुझे तू अपने पास से अच्छी सन्तान प्रदान कर। तू ही प्रार्थना का सुनने वाला है।

...رَبِّ لَا تَذَرْنِي فَرْدًا وَأَنتَ خَيْرُ الْوَارِثِينَ 21:89

ऐ मेरे रब! मुझे अकेला न छोड़ यूँ, सबसे अच्छा वारिस तो तू ही है।

وَوَصَّيْنَا الْإِنسَانَ بِوَالِدَيْهِ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ وَهْنًا عَلَىٰ وَهْنٍ وَفِصَالُهُ فِي عَامَيْنِ أَنِ اشْكُرْ لِي وَلِوَالِدَيْكَ إِلَيَّ الْمَصِيرُ (31:14)

और हमने मनुष्य को उसके अपने माँ-बाप के मामले में ताकीद की है - उसकी माँ ने निढाल होकर उसे पेट में रखा और दो वर्ष उसके दूध छूटने में लगे - कि "मेरे प्रति कृतज्ञ हो और अपने माँ-बाप के प्रति भी। अंततः मेरी ही ओर आना है

اللَّهُمَّ مَالِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَن تَشَاءُ وَتَنزِعُ الْمُلْكَ مِمَّن تَشَاءُ وَتُعِزُّ مَن تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَن تَشَاءُ ۖ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۖ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

تُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۖ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ۖ وَتَرْزُقُ مَن تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ 3:26-27

कहो, "ऐ अल्लाह, राज्य के स्वामी! तू जिसे चाहे राज्य दे और जिससे चाहे राज्य छीन ले, और जिसे चाहे इज़्ज़त (प्रभुत्व) प्रदान करे और जिसको चाहे अपमानित कर दे। तेरे ही हाथ में भलाई है। निस्संदेह तुझे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है। तू रात को दिन में पिरोता है और दिन को रात में पिरोता है। तू निर्जीव से सजीव को निकालता है और सजीव से निर्जीव को निकालता है, और जिसे चाहता है बेहिसाब रोज़ी देता है।"

...وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلَٰكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ (63:8)

और इज़्ज़त तो अल्लाह और उसके रसूल और मोमिनों के लिए है, किन्तु वे मुनाफ़िक़ जानते नहीं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَاشْكُرُوا لِلَّهِ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ 2:172

ऐ ईमान लानेवालो! जो अच्छी-सुथरी चीज़ें हमने तुम्हें प्रदान की हैं उनमें से खाओ और अल्लाह के आगे कृतज्ञता दिखलाओ, यदि तुम उसी की बन्दगी करते हो।

وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ 51:22

और आकाश मे भी तुम्हारी रोज़ी है और वह चीज़ भी जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है।

...كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِندَهَا رِزْقًا قَالَ يَا مَرْيَمُ أَنَّىٰ لَكِ هَٰذَا قَالَتْ هُوَ مِنْ عِندِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَن يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ

(3:37)

जब कभी ज़करिया मरियम के पास मेहराब (इबादतगाह) में जाता, तो उसके पास कुछ रोज़ी पाता। उसने कहा, "ऐ मरयम! ये चीज़े तुझे कहाँ से मिलती हैं?" उसने कहा, "यह अल्लाह के पास से हैं।" निस्संदेह अल्लाह जिसे चाहता है, बेहिसाब देता है

...اللَّهُمَّ رَبَّنَا أَنزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِّنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا عِيدًا لِّأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً مِّنكَ ۖ وَارْزُقْنَا وَأَنتَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ 5:114

ऐ अल्लाह, हमारे रब! हम पर आकाश से नेमतों का थाल उतार, जो हमारे लिए और हमारे अगलों और हमारे पिछलों के लिए ख़ुशी का कारण बने और तेरी ओर से एक निशानी हो, और हमें रोज़ी प्रदान कर। तू सबसे अच्छा प्रदान करने वाला है।

رِجَالٌ لَّا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَن ذِكْرِ اللَّهِ وَإِقَامِ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ ۙ يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيهِ الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَيَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِ ۗ وَاللَّهُ يَرْزُقُ مَن يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ 24:37-38

जिन्हें अल्लाह की याद और नमाज क़ायम करने और ज़कात देने से न तो व्यापार ग़ाफ़िल करता है और न क्रय-विक्रय। वे उस दिन से डरते रहते हैं जिसमें दिल और आँखें विकल हो जाएँगी ताकि अल्लाह उन्हें बदला प्रदान करे। उनके अच्छे से अच्छे कामों का, और अपने उदार अनुग्रह से उन्हें और अधिक प्रदान करे। अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब रोज़ी देता है

لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ (42:12)

आकाशों और धरती की कुंजियाँ उसी के पास हैं। वह जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और जिसके लिए चाहता है नपी-तुली कर देता है। निस्संदेह उसे हर चीज़ का ज्ञान है

وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۚ وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ بَالِغُ أَمْرِهِ ۚ قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا 65:3

और उसे वहाँ से रोज़ी देगा जिसका उसे गुमान भी न होगा। जो अल्लाह पर भरोसा करे तो वह उसके लिए काफ़ी है। निश्चय ही अल्लाह अपना काम पूरा करके रहता है। अल्लाह ने हर चीज़ का एक अन्दाजा नियत कर रखा है।

وَكَأَيِّن مِّن دَابَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا اللَّهُ يَرْزُقُهَا وَإِيَّاكُمْ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ 29:60

कितने ही चलनेवाले जीवधारी है, जो अपनी रोज़ी उठाए नहीं फिरते। अल्लाह ही उन्हें रोज़ी देता है और तुम्हें भी! वह सब कुछ सुनता, जानता है

...رَبِّ اجْعَلْ هَٰذَا بَلَدًا آمِنًا... 2:126

ऐ मेरे रब! इस (नगरी) को शान्तिमय शहर बना दे।

...رَبَّنَا لِيُقِيمُوا الصَّلَاةَ فَاجْعَلْ أَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِي إِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُم مِّنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ 14:37

हमारे रब! ताकि वे नमाज़ क़ायम करें। अतः तू लोगों के दिलों को उनकी ओर झुका दे और उन्हें फलों और पैदावार की आजीविका प्रदान कर, ताकि वे कृतज्ञ बने॥

...إِنَّ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوا عِندَ اللَّهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا لَهُ ۖ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ 29:17

तुम अल्लाह से हटकर जिनके बंदे बनते हो वे तुम्हारे लिए रोज़ी का अधिकार नहीं रखते। अतः तुम अल्लाह ही के यहाँ रोज़ी तलाश करो और उसी की बन्दगी करो और उसके आभारी बनो। तुम्हें उसी की ओर लौटकर जाना है।

....إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۚ وَمَا أَنفَقْتُم مِّن شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ 34:39

मेरा रब ही है जो अपने बन्दों में से जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और जिसके लिए चाहता है नपी-तुली कर देता है। और जो कुछ भी तुमने ख़र्च किया, उसकी जगह वह तुम्हें और देगा। वह सबसे अच्छा रोज़ी देनेवाला है।

إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ 51:58

निश्चय ही अल्लाह ही है रोज़ी देनेवाला, शक्तिशाली, दृढ़।

---

6 आयात-ए-शिफ़ा:

قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ (9:14)

उनसे लड़ो। अल्लाह तुम्हारे हाथों से उन्हें यातना देगा और उन्हें अपमानित करेगा और उनके मुक़ाबले में वह तुम्हारी सहायता करेगा। और ईमानवाले लोगों के दिलों को शिफ़ा देगा;॥

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَتْكُم مَّوْعِظَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ (10:57)

ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से उपदेश औऱ जो कुछ सीनों में (रोग) हैं, उसके लिए शिफ़ा (रोगमुक्ति) और मोमिनों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता आ चुकी है

ثُمَّ كُلِي مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ فَاسْلُكِي سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ۚ يَخْرُجُ مِن بُطُونِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِّلنَّاسِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ (16:69)

फिर हे मधुमख्खी हर प्रकार के फल-फूलों से ख़ुराक ले और अपने रब के समतम मार्गों पर चलती रह।" उसके पेट से

विभिन्न रंग का एक पेय निकलता है, जिसमें लोगों के लिए आरोग्य है। निश्चय ही सोच-विचार करनेवाले लोगों के लिए इसमें एक बड़ी निशानी है।

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ وَلَا يَزِيدُ الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا (17:82)

हम क़ुरआन में से जो उतारते है वह मोमिनों के लिए शिफ़ा (आरोग्य) और दयालुता है, किन्तु ज़ालिमों के लिए तो वह बस घाटे ही में अभिवृद्धि (इज़ाफ़ा) करता है।

وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ (26:80)

और जब मैं बीमार होता हूँ, तो वही मुझे शिफ़ा देता है।

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا أَعْجَمِيًّا لَّقَالُوا لَوْلَا فُصِّلَتْ آيَاتُهُ أَأَعْجَمِيٌّ وَعَرَبِيٌّ قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا هُدًى وَشِفَاءٌ..... (41:44) ...

यदि हम उसे ग़ैर अरबी क़ुरआन बनाते तो वे कहते कि "उसकी आयतें क्यों नहीं (हमारी भाषा में) खोलकर बयान की गईं? यह क्या कि वाणी तो ग़ैर अरबी है और व्यक्ति अरबी?" कहो, "वह उन लोगों के लिए जो ईमान लाए मार्गदर्शन और शिफ़ा (आरोग्य) है...।"

رَبِّ أَنِّي مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَأَنتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ 21:83

मेरे रब, मुझे बहुत तकलीफ़ पहुँची है, और तू सबसे बढ़कर दयावान है।

...رَبِّ أَنِّي مَسَّنِيَ الشَّيْطَانُ بِنُصْبٍ وَعَذَابٍ 38:41

मेरे रब, शैतान ने मुझे दुख और पीड़ा पहुँचा रखी है।

الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُم بِذِكْرِ اللَّهِ ۗ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ (13:28)

जो ईमान लाए और जिनके दिलों को अल्लाह के स्मरण से आराम और चैन मिलता है। सुन लो, अल्लाह के स्मरण से ही दिलों को संतोष प्राप्त हुआ करता है।

ثُمَّ أَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَنزَلَ جُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا... (9:26)

अन्ततः अल्लाह ने अपने रसूल पर और मोमिनों पर अपनी सकीनत (प्रशान्ति) उतारी और ऐसी सेनाएँ उतारीं जिनको तुमने नहीं देखा। और इनकार करनेवालों को यातना दी, और यही इनकार करनेवालों का बदला है।

وَمِن رَّحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِن فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ (28:73)

उसने अपनी दयालुता से तुम्हारे लिए रात और दिन बनाए, ताकि तुम उसमें) रात में (आराम पाओ और ताकि तुम)दिन में (उसका अनुग्रह) रोज़ी (तलाश करो और ताकि तुम कृतज्ञता दिखाओ।

أَمَّن يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ... (27:62)

या वह कौन है जो व्यग्र की पुकार सुनता है, जब वह उसे पुकारे और तकलीफ़ दूर कर देता है?

هُوَ الَّذِي أَنزَلَ السَّكِينَةَ فِي قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ لِيَزْدَادُوا إِيمَانًا مَّعَ إِيمَانِهِمْ ۗ وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا (48:4)

वहीं है जिसने ईमानवालों के दिलों में सकीना (प्रशान्ति) उतारी, ताकि अपने ईमान के साथ वे और ईमान की अभिवृद्धि करें - आकाशों और धरती की सभी सेनाएँ अल्लाह ही की हैश, और अल्लाह सर्वज्ञ, तत्त्वदर्शी है।

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ ... (40:60)

तुम्हारे रब ने कहा कि "तुम मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी पुकार का जवाब दूँगा।"

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۖ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ (2:186)

और जब तुमसे मेरे बन्दे मेरे सम्बन्ध में पूछें, तो मैं तो निकट ही हूँ, पुकार का उत्तर देता हूँ, जब वह मुझे पुकारता है, तो उन्हें चाहिए कि वे मेरी बात मानें और मुझ पर ईमान रखें, ताकि वे सीधा मार्ग पा लें।

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ بِاَسْمَاءِ هٰؤُلَاءِ الْمُبَارَكَةِ ط

الٓمٓ الٓمٓصٓ الٓرٰ الٓمٓرٰ كٓهٰيٰعٓصٓ طٰهٰ طٰسٓمٓ طٰسٓ يٰسٓ صٓ حٰمٓ عٓسٓقٓ قٓ نٓ ط

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ بِاَنَّ لَكَ الْحَمْدُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ الْمَنَّانُ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَاذُوالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ اِنَّا نَسْئَلُكَ

ऐ अल्लाह हम आप से इन बरकत वाले नामों के ज़रिये सवाल करते हैं

ऐ अल्लाह हम आप से माँगते हैं क्योंकि आप ही के लिये वास्तविक तारीफ़ है, आपके सिवा कोई इलाह नहीं, आप एहसान करने वाले, आसमानों और ज़मीन को वजूद में लाने वाले हैं, ऐ बुज़ुर्गी और इज़्ज़त वाले, ऐ सदा से ज़िन्दा और सदा क़ायम रहने वाले, हम आप से सवाल करते हैं।

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ بِالْاَدْعِيَةِ كَمَا عَلَّمْتَنَا نَبِيَّنَا وَرَسُوْلَنَا صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

ऐ अल्लाह हम आप उन दुआओं के ज़रिये माँग रहे हैं जैसी हमारे नबी और रसूल स0 ने हमें सिखाईं।

اَللّٰهُمَّ اِنِّي عَبْدُكَ/اَمَتُكَ وَابْنُ/وَاَمَةُ عَبْدِكَ وَابْنُ/وَاَمَةُ اَمَتِكَ نَاصِيَتِيْ بِيَدِكَ مَاضٍ فِيَّ حُكْمُكَ عَدْلٌ فِيَّ قَضَائُكَ اَسْئَلُكَ بِكُلِّ اِسْمٍ هُوَ لَكَ سَمَّيْتَ بِهٖ نَفْسَكَ اَوْ اَنْزَلْتَهٗ فِيْ كِتَابِكَ اَوْ عَلَّمْتَهٗ اَحَدًا مِّنْ خَلْقِكَ اَوِ اسْتَأْثَرْتَ بِهٖ فِيْ عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ اَنْ تَجْعَلَ الْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ رَبِيْعَ قَلْبِيْ وَنُوْرَ صَدْرِيْ وَجَلَاءَ حُزْنِيْ وَذَهَابَ هَمِّيْ

ऐ अल्लाह मैं आपका/आपकी बन्दा/बन्दी, आपके बन्दे और बन्दी का/की बेटा/बेटी हूँ। मेरी पेशानी (माथा) आप ही के हाथ में है। मेरी ज़ात (अस्तित्व) में आप ही का हुक्म चलता है, मेरे मामले में आपका फ़ैसला सरापा इंसाफ़ है। मैं आप से हर उस नाम के ज़रिये माँगता/माँगती हूँ जो आपने उपने लिये ख़ुद तै किया या आपने अपनी किताब में नाज़िल फ़रमाया या अपना मख़लूक़ (सृष्टि) में किसी एक को भी सिखाया या अपने ही पास इल्म-ए-ग़ैब में रखा – कि आप अज़ीम (महान) क़ुरआन को मेरे दिल की बहार, मेरे सीने का नूर, मेरे ग़मों का इलाज और परेशानियाँ दूर करने का ज़रिया बना दीजिये।

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ حَسْبُنَا اللهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ عَلَى اللهِ تَوَكَّلْنَا نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ط وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ

अल्लाह के सिवा किसी की कोई ताक़त और क़ुव्वत नहीं है, हमारे लिये अल्लाह काफ़ी है और वह बहुत अच्छा कारसाज़ है, हमने अल्लाह ही पर भरोसा कर लिया। कितना अच्छा सरपरस्त और कितना अच्छा मददगार, और जिस ने अल्लाह पर भरोसा किया तो वह उसके लिये काफ़ी है।

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِي بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِيْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ ط اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحُزْنِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْبُخْلِ وَالْجُبْنِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ غَلَبَةِ الدَّيْنِ وَقَهْرُ الرِّجَالِ ط اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عِلْمٍ لَا يَنفَعُ وَمِنْ قَلْبٍ لَا يَخْشَعُ وَمِنْ نَفْسٍ لَا تَشْبَعُ وَمِنْ دَعْوَةٍ لَا يَسْتَجَابُ لَهَا وَمِنْ دُعَاءٍ لَا يُسْمَعُ۔

ऐ अल्लाह मुझे हराम से बचाकर मेरे लिये हलाल के काफ़ी कर दीजिये और अपने फ़ज़्ल से मुझे अपने सिवा हर एक से बे नियाज़ कर दीजिये। ऐ अल्लाह मैं आपकी पनाह चाहता/चाहती हूँ परेशानियों और ग़म से और मैं आपकी पनाह चाहता/चाहती हूँ मजबूरी और काहिली से और मैं आपकी पनाह चाहता/चाहती हूँ कंजूसी और जिन्सी ना-अहली से और मैं आपकी पनाह चाहता/चाहती हूँ क़र्ज़ के बोझ और लोगों के क़हर से। ऐ अल्लाह मैं आपकी पनाह चाहता/चाहती हूँ ऐसे इल्म से जो फ़ायदाबख़्श न हो और ऐसे दिल से जो लरज़ता न हो और ऐस नफ़्स से जो पसीजता न हो और ऐसी पुकार से जिसका जवाब न आए और ऐसी दुआ से जो सुनी न जाए।

صدق اللہ العظیم وصدق رسولہ الکریم وصلی اللہ تعالیٰ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ ط